जेएनयू की यादगार यात्रा: कविता, कॉमेडी, किताब और विचारों से भरी एक रात

यात्राएँ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचने का माध्यम होतीं हैं जो हमारे भीतर अनुभवों की एक नई दुनिया बसाती हैं। रास्ते में मिलने वाले लोग, सफर के दौरान गूँजते ठहाके, किसी विश्वविद्यालय के सभागार में कविता सुनते युवाओं की तालियाँ, अपनी वर्षों की साहित्यिक साधना को पुस्तक के रूप में सम्मान मिलता देखना और फिर आधी रात को लौटते समय मन में उमड़ती स्मृतियाँ—ये सब मिलकर किसी भी यात्रा को अविस्मरणीय बना देते हैं। मेरी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की 8 अक्टूबर 2026 की यात्रा भी ऐसी ही एक यादगार यात्रा रही। यह यात्रा साहित्य, मित्रता, हास्य, बौद्धिक संवाद और लोकतांत्रिक चेतना के अनेक रंगों से सजी हुई थी। इसमें दौसा की अपनी आत्मीय दुनिया थी, दिल्ली की भागती-दौड़ती सड़कें थीं, देश के एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान का आकर्षण था और एक लेखक के लिए अपने विचारों को पुस्तक के रूप में पाठकों तक पहुँचाने का सुख भी था। इस यात्रा का उद्देश्य जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में 8 से 10 अक्टूबर 2026 तक आयोजित हृश्वअष्ट्रक्कक्ष 2026 के अवसर पर 8 अक्टूबर की शाम सात बजे होने वाली काव्य संध्या में सम्मिलित होना था। इस आयोजन में शामिल होने का निमंत्रण मुझे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. करण सिंह के आमंत्रण तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय, जाट पाली, महेंद्रगढ़, हरियाणा के प्रोफेसर डॉ. सुनील बैफलावत के विशेष आग्रह पर प्राप्त हुआ था। मेरे लिए यह एक साहित्यिक कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर था,और अपने साहित्यिक जीवन के अनुभवों को एक नए शैक्षणिक वातावरण में महसूस करने, देश के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के बीच समय बिताने और अपनी पुस्तक 'राजनीति, प्रेस और पत्रकार' के विमोचन से जुड़ी स्मृतियों को संजोने का अवसर भी था।

जब कोई लेखक अपने जीवन के अनेक वर्षों में समाज, राजनीति, लोकतंत्र, पत्रकारिता और मनुष्य के बदलते व्यवहार को शब्दों में दर्ज करता है, तो उसके लिए पुस्तक का पाठकों तक पहुँचना किसी निजी उपलब्धि से कम नहीं होता। और जब यह अवसर देश के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के सभागार में मिले, जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों से आए विद्यार्थी, शिक्षक और विचारशील लोग उपस्थित हों, तो उस अनुभव का महत्त्व और बढ़ जाता है। यह यादगार यात्रा दौसा से दिल्ली की ओर बढ़ती एक स्विफ्ट कार से शुरू होती है।

8 अक्टूबर 2026 की सुबह मेरे लिए सामान्य दिनों जैसी नहीं थी। मन में दिल्ली जाने की उत्सुकता थी। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का नाम सुनते ही देश के उच्च शिक्षण संस्थानों, बौद्धिक विमर्शों, राजनीति, विद्यार्थी आंदोलनों और वैचारिक बहसों की अनेक छवियाँ सामने आने लगती हैं। वहाँ जाने का निमंत्रण मिलना और साहित्यिक कार्यक्रम का हिस्सा बनना अपने आप में प्रसन्नता का विषय था।

सुबह लगभग 11 बजे दौसा से दिल्ली के लिए हमारी यात्रा शुरू हुई। मेरे साथ राजपाल महावर और मशहूर कॉमेडियन पीके मस्त थे। हम तीनों स्विफ्ट कार में सवार हुए और दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे की ओर बढ़ चले। राजस्थान की धरती पर फैली सड़कों से गुजरते हुए दिल्ली की ओर बढ़ना अपने आप में एक अलग अनुभव है। एक्सप्रेसवे की चौड़ी सड़कें, दूर तक दिखाई देता खुला आकाश, सड़क के दोनों ओर बदलते दृश्य और तेज गति से आगे बढ़ती गाड़ियाँ यात्रा को सहज और रोमांचक बनाती हैं। लेकिन हमारी यात्रा की खास बात सड़क और गाड़ी नहीं थी। हमारे साथ पीके मस्त जैसे हास्य कलाकार मौजूद थे, इसलिए रास्ते में हँसी और मनोरंजन की कोई कमी नहीं थी।

पीके मस्त अपनी कॉमेडी के लिए पहचाने जाते हैं। उनकी बातचीत में सहज हास्य है और रोजमर्रा के जीवन की सामान्य घटनाओं को भी मजेदार बना देने की कला है। जैसे ही हमारी गाड़ी दौसा से आगे बढ़ी, उन्होंने अपनी चुटीली बातों और हास्यपूर्ण टिप्पणियों से माहौल को खुशनुमा बना दिया। यात्रा के दौरान कभी किसी प्रसंग पर हँसी छूट पड़ती, कभी कोई नई बात शुरू हो जाती और कभी किसी सामान्य घटना में छिपा हास्य सामने आ जाता। कार की खिड़की से बाहर सड़क तेजी से पीछे छूट रही थी और भीतर ठहाकों की एक अलग दुनिया आबाद थी।

यात्रा में साथ चलने वाले लोगों का स्वभाव सफर की स्मृतियों को बहुत प्रभावित करता है। यदि साथ के लोग आत्मीय हों, बातचीत सहज हो और वातावरण में हँसी का रंग घुला हो, तो लंबा रास्ता भी छोटा लगने लगता है। हमारे साथ भी यही हो रहा था। मैं साहित्य से जुड़ा व्यक्ति हूँ। शब्दों, विचारों, सामाजिक सरोकारों और मानवीय अनुभवों के बीच मेरा जीवन बीतता है। राजपाल महावर की संगति और पीके मस्त का हास्य इस यात्रा में दो अलग-अलग रंग लेकर आए थे। एक ओर साहित्यिक कार्यक्रम की उत्सुकता थी, दूसरी ओर मित्रों के साथ सफर का आनंद।

मन में यह भी विचार उठ रहा था कि कुछ ही घंटों बाद हम दिल्ली के उस विश्वविद्यालय परिसर में होंगे, जिसके बारे में देशभर में चर्चाएँ होती रहती हैं। वहाँ विद्यार्थी पढ़ते हैं, शोध करते हैं, अपनी आकांक्षाओं को आकार देते हैं और जीवन के नए रास्तों की तलाश करते हैं। एक लेखक के लिए विश्वविद्यालय वह विचारों की प्रयोगशाला होता है जहाँ पुस्तकें पुस्तकालयों की अलमारियों में नहीं रहतीं, बल्कि बहसों, प्रश्नों, असहमतियों और नए विचारों के रूप में जीवित रहती हैं। इन्हीं विचारों के साथ हमारी कार दिल्ली की ओर बढ़ रही थी।

दोपहर लगभग दो बजे हम दिल्ली स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान यानी एम्स पहुँचे। यहाँ पीके मस्त के मित्र और एम्स में सिक्योरिटी ऑफिसर के पद पर कार्यरत बिजेंद्र सिंह यादव हमारा इंतजार कर रहे थे। लंबी यात्रा के बाद किसी परिचित के पास पहुँचने का सुख अलग होता है। महानगरों की व्यस्त जिंदगी में लोग समय के साथ दौड़ते रहते हैं, लेकिन जब कोई मित्र या परिचित अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच आपका इंतजार करता मिले, तो वह आत्मीयता मन को छू जाती है।

बिजेंद्र सिंह यादव अपने चेंबर में हमारा इंतजार कर रहे थे। वहाँ पहुँचकर हम सबने कुछ देर बातचीत की। पीके मस्त की उपस्थिति का अर्थ था कि सामान्य बातचीत भी ज्यादा देर तक सामान्य नहीं रह सकती थी। उन्होंने अपने हास्य से वहाँ का माहौल खुशनुमा बना दिया। हँसी-मजाक के बीच हमने नाश्ता किया और यात्रा की थकान कुछ कम हुई। इस मुलाकात में मित्रता का वह सहज रूप दिखाई दिया, जो किसी औपचारिक परिचय का मोहताज नहीं होता। पीके मस्त और बिजेंद्र सिंह यादव के बीच बचपन के साथी हैं। मित्रता की ऐसी कड़ियाँ जीवन को सुंदर बनाती हैं। आदमी चाहे किसी भी पद पर काम करता हो, उसके जीवन की असली पूँजी वे रिश्ते होते हैं, जिनमें दिखावे से अधिक अपनापन होता है और इन दोनों के मित्रता में ऐसा ही देखने को मिला।



इसके बाद हमने एम्स में आयोजित मेंटल हेल्थ कार्यक्रम में भागीदारी की। आज के समय में मानसिक स्वास्थ्य पर बातचीत करना बहुत आवश्यक हो गया है। जीवन की भागदौड़, काम का दबाव, सामाजिक अपेक्षाएँ, आर्थिक चिंताएँ और भविष्य को लेकर अनिश्चितता मनुष्य को भीतर से प्रभावित करती हैं। ऐसे में मानसिक स्वास्थ्य को समझना और उसे महत्त्व देना किसी भी स्वस्थ समाज की बुनियादी जरूरत है। शरीर की बीमारियों पर तो हम अक्सर चर्चा करते हैं, लेकिन मन की परेशानियों को कई बार नजरअंदाज कर देते हैं, जबकि मनुष्य का जीवन शरीर और मन, दोनों के संतुलन से चलता है। मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाने वाले कार्यक्रम इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एम्स में कुछ समय बिताने के बाद हमारी यात्रा का अगला पड़ाव जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय था। अब मन में उत्सुकता और बढ़ गई थी, क्योंकि शाम का मुख्य कार्यक्रम वहीं होना था। एम्स से हम बिजेंद्र सिंह यादव को साथ लेकर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कन्वेंशन सेंटर स्थित ऑडिटोरियम पहुँचे। यहाँ पहले से ही कार्यक्रम चल रहे थे। सभागार और उसके आसपास का वातावरण किसी बड़े शैक्षणिक आयोजन की व्यस्तता का अनुभव करा रहा था। जेएनयू का नाम देश के उन विश्वविद्यालयों में लिया जाता है, जिन्होंने उच्च शिक्षा, शोध, सामाजिक विज्ञान, राजनीति, भाषा, साहित्य और सार्वजनिक विमर्श के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। यहाँ प्रवेश पाना विद्यार्थियों के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जाता है, क्योंकि इसके लिए मेहनत, लगन, अध्ययन और प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा शैक्षणिक उपलब्धियों से ही बनती उसकी असली पहचान वहाँ तैयार होने वाली बौद्धिक संस्कृति से होती है—ऐसी संस्कृति जिसमें विद्यार्थी प्रश्न पूछना सीखते हैं, किसी विचार को तर्क की कसौटी पर परखते हैं, अपने अध्ययन के माध्यम से समाज को समझते हैं और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की तैयारी करते हैं।

किसी भी विश्वविद्यालय का महत्त्व इस बात से भी तय होता है कि वहाँ विद्यार्थी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं या जीवन को समझने की दृष्टि भी विकसित करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि विवेकशील नागरिक तैयार करना भी हैऔर जेएनयू इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है! जेएनयू पहुँचकर मुझे इस बात का विशेष अनुभव हुआ कि साहित्य और शिक्षा का संबंध कितना गहरा है। कविता किसी मंच तक सीमित नहीं रहती। वह मनुष्य के अनुभवों, संघर्षों, सपनों और प्रश्नों को लेकर समाज के बीच जाती है। विश्वविद्यालय का वातावरण उसे सुनने, समझने और उस पर विचार करने के लिए एक नई जमीन देता है।

सभागार में कार्यक्रम चल रहा था। हमने वहाँ चाय-नाश्ता किया और शाम की काव्य संध्या की प्रतीक्षा करने लगे। उस समय मन में कई भाव एक साथ थे। देश के अलग-अलग हिस्सों से आए विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच कविता सुनने का अवसर मिलने वाला था। साहित्यिक मंच पर अनेक रचनाकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले थे और इसी मंच पर मेरी पुस्तक के विमोचन का अवसर भी आने वाला था। एक लेखक के लिए यह क्षण विशेष होता है जब वह कोई पुस्तक लिखता है, तो उसके पीछे शब्दों का बेहतरीन चयन होता है, वर्षों के अनुभव, समाज को देखने की दृष्टि, अनेक घटनाओं की स्मृतियाँ, विचारों का संघर्ष और मनुष्य को समझने की जिज्ञासा होती है। पुस्तक प्रकाशित होने के बाद लेखक की निजी मेहनत सार्वजनिक संवाद का हिस्सा बन जाती है। मेरे लिए भी यह आयोजन अपनी साहित्यिक यात्रा के एक महत्वपूर्ण पड़ाव जैसा था। आखिरकार वह समय आ गया, जिसका हम सभी को इंतजार था। शाम सात बजे काव्य संध्या का आयोजन शुरू हुआ। सभागार में बड़ी संख्या में विद्यार्थी और शिक्षक उपस्थित थे। खचाखच भरे ऑडिटोरियम का दृश्य उत्साहवर्धक था। किसी भी साहित्यिक कार्यक्रम की वास्तविक सफलता मंच पर उपस्थित कवियों की संख्या से नहीं मापी जा सकती उसकी सफलता इस बात में होती है कि श्रोता कितनी रुचि से सुनते हैं, रचनाओं से कितना जुड़ते हैं और कविता उनके भीतर कैसी प्रतिक्रिया पैदा करती है। उस शाम जेएनयू के सभागार में यही वातावरण दिखाई दिया।

काव्य संध्या का संचालन प्रोफेसर डॉ. सुनील बैफलावत ने किया। उनका संचालन कार्यक्रम को आगे बढ़ाने वाला मात्र औपचारिक काम नहीं था, बल्कि कवियों और श्रोताओं के बीच एक सहज संवाद स्थापित करने का माध्यम भी था। एक अच्छे संचालक की विशेषता यह होती है कि वह मंच पर उपस्थित रचनाकारों को पर्याप्त अवसर दे और श्रोताओं की रुचि को बनाए रखे। इस काव्य संध्या में नवल घुणावत जयपुर , सोनिका पवार सवेरा बहादुरगढ , रवि सिरोहा रोहतक , अरुण शर्मा मेरठ और आफताब आलम दिल्ली ने अपनी गजलों, गीतों और कविताओं के माध्यम से श्रोताओं का मनोरंजन किया। हर कवि की अपनी शैली होती है। वे अपनी गजल के शेर से दिल को छूता है, गीत की लय में भावनाएँ पिरोता है, कविता के माध्यम से जीवन की विसंगतियों को सामने रखता है और हास्य-व्यंग्य के सहारे समाज की उन सच्चाइयों को उजागर करता है, जिन्हें हम अक्सर गंभीरता से देखने से बचते हैं।

कविता की यही खूबी है कि वह एक ही मंच पर अनेक स्वरों को स्थान दे सकती है। उसमें प्रेम भी है, पीड़ा भी; हास्य भी है, व्यंग्य भी; सामाजिक यथार्थ भी है और भविष्य के प्रति आशा भी। कवियों ने अपनी प्रस्तुतियों से सभागार में बैठे विद्यार्थियों और शिक्षकों को खूब हँसाया। कई प्रस्तुतियों पर जोरदार तालियाँ गूँजीं और अनेक अवसरों पर श्रोता हँसते-हँसते लोटपोट हो गए। पूरा सभागार जीवंत हो उठा।

मुझे यह देखकर विशेष प्रसन्नता हुई कि विद्यार्थी साहित्यिक कार्यक्रम में इतनी रुचि ले रहे थे। आज अक्सर यह शिकायत सुनने को मिलती है कि नई पीढ़ी पुस्तकों और साहित्य से दूर होती जा रही है, लेकिन ऐसे आयोजन इस धारणा को चुनौती देते हैं। यदि प्रस्तुति प्रभावशाली हो, विषय जीवन से जुड़ा हो और भाषा में सहजता हो, तो युवा श्रोता कविता को पूरे मन से सुनते हैं। कविता का उद्देश्य गंभीर भावनाएँ पैदा करना नहीं है। वह मनुष्य को हँसाना भी जानती है। जीवन की कठिनाइयों के बीच हँसी एक बड़ी राहत है। हास्य हमें अपनी कमजोरियों को पहचानने, सामाजिक विसंगतियों को देखने और परिस्थितियों को एक अलग दृष्टि से समझने का अवसर देता है। उस शाम मंच पर कविता सुनाई जा रही थी जो सभागार में बैठे लोगों के साथ एक जीवंत रिश्ता बना रही थी। यही किसी सफल काव्य संध्या की पहचान है। काव्य संध्या में एक के बाद एक प्रस्तुतियाँ हो रही थीं। कवियों ने अपने गीतों, गजलों और हास्य रचनाओं से वातावरण को आनंदमय बना दिया था। इसी क्रम में राजस्थान पुलिस में इंस्पेक्टर कॉमेडियन पीके मस्त मंच पर आए। पीके मस्त की अपनी विशिष्ट पहचान है। पुलिस की नौकरी से जुड़ा अनुभव और कॉमेडी की दुनिया में उनकी सक्रियता उनके व्यक्तित्व को अलग रंग देती है। पुलिस की दुनिया में अनुशासन, नियम-कानून और जिम्मेदारियों का महत्त्व होता है, जबकि हास्य कलाकार का काम लोगों को हँसाना और उनके मन का बोझ हल्का करना होता है। इन दोनों अनुभवों का मेल उनकी प्रस्तुतियों को रोचक बनाता है।

उन्होंने अपनी कॉमेडी के माध्यम से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। सभागार में हँसी के ठहाके गूँजते रहे। उनकी प्रस्तुति ने काव्य संध्या में हास्य का नया रंग भर दिया। मुझे इस बात की भी खुशी थी कि दौसा से दिल्ली तक की यात्रा में हमारे साथ रहे पीके मस्त को जेएनयू जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। सुबह से ही वे हमारे सफर को हँसी से भरते आए थे और शाम को सभागार में भी उन्होंने अपनी कला से लोगों को आनंदित किया।

मनोरंजन की दुनिया में हास्य कलाकार की भूमिका को कम करके नहीं आँकना चाहिए। तनाव से भरे जीवन में हँसी मनुष्य को कुछ क्षणों के लिए ही सही, चिंताओं से मुक्त करती है। अच्छी कॉमेडी जीवन को देखने का एक खास नजरिया देती है। जब हास्य हमारे आसपास की विसंगतियों को उजागर करता है, तब वह व्यंग्य का रूप ले लेता है और जब व्यंग्य मनुष्य को सोचने के लिए विवश करता है, तब मनोरंजन अपने आप में एक सामाजिक भूमिका निभाने लगता है। उस शाम पीके मस्त की प्रस्तुति ने कार्यक्रम को यादगार बनाने में अपना योगदान दिया।

काव्य संध्या के बाद मेरे जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण क्षण भी आया। इसी मंच पर मेरी पुस्तक 'राजनीति, प्रेस और पत्रकार का विमोचन संपन्न हुआ। किसी लेखक के लिए पुस्तक लिखना एक लंबी यात्रा है इस यात्रा में विचारों को एकत्रित करना, घटनाओं का विश्लेषण करना, तथ्यों को समझना, भाषा को सँवारना और अपनी बात को पाठकों के सामने स्पष्ट रूप में प्रस्तुत करना शामिल होता है। कई बार किसी पुस्तक के पीछे वर्षों का चिंतन होता है, भले ही उसे लिखने में कुछ महीने ही क्यों न लगे हों।

मेरी इस पुस्तक का विषय भी हमारे समय के एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न से जुड़ा है—राजनीति, प्रेस और पत्रकार। राजनीति और पत्रकारिता लोकतांत्रिक व्यवस्था के दो ऐसे क्षेत्र हैं, जिनका समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। राजनीति जनहित से जुड़े निर्णयों को प्रभावित करती है, जबकि पत्रकारिता का दायित्व सत्ता, समाज और नागरिकों के बीच सूचनाओं तथा विचारों का सार्थक संवाद स्थापित करना है।

एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए आवश्यक है कि राजनीति जनसेवा के अपने मूल उद्देश्य से जुड़ी रहे और पत्रकारिता अपनी विश्वसनीयता, निष्पक्षता तथा जनहित के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखे। समय के साथ दोनों क्षेत्रों में अनेक परिवर्तन हुए हैं। संचार के नए माध्यमों, डिजिटल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया और बदलती सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों ने समाचारों के निर्माण, प्रसार और ग्रहण करने के तरीकों को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों को समझना पत्रकारों या राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए ही आवश्यक नहीं है बल्कि प्रत्येक जागरूक नागरिक को यह समझना चाहिए कि उसे मिलने वाली सूचना कहाँ से आती है, उसके पीछे कौन-से तथ्य हैं और किसी खबर या विचार का लोकतांत्रिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ सकता है।

एक लेखक के रूप में मेरी रुचि हमेशा सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों में रही है। साहित्य और पत्रकारिता दोनों ही मनुष्य तथा समाज को समझने के माध्यम हैं। साहित्य संवेदनाओं को अभिव्यक्ति देता है, जबकि पत्रकारिता समकालीन घटनाओं और सार्वजनिक जीवन के प्रश्नों को सामने लाती है। राजनीति इन दोनों से संवाद करती है, क्योंकि उसका संबंध समाज के जीवन और भविष्य से है। इसीलिए इस पुस्तक का विमोचन मेरे लिए एक औपचारिक कार्यक्रम नहीं था यह मेरे विचारों को व्यापक पाठक समुदाय तक पहुँचाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर था।

जेएनयू के सभागार में साहित्यकारों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की उपस्थिति में अपनी पुस्तक के विमोचन का साक्षी बनना मेरे लिए सुखद अनुभव था। किसी पुस्तक का वास्तविक जीवन उसके प्रकाशित होने के बाद शुरू होता है। जब वह पाठकों के हाथों में पहुँचती है, जब उस पर चर्चा होती है और जब उसके विचार किसी पाठक को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं, तभी लेखक की मेहनत सार्थक होती है। मैं इस अवसर पर आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रति आभार अनुभव कर रहा था। प्रोफेसर डॉ. करण सिंह का आमंत्रण, प्रोफेसर डॉ. सुनील बैफलावत का आग्रह और कार्यक्रम से जुड़े लोगों का सहयोग इस यात्रा को मेरे लिए विशेष बना गया। दौसा से दिल्ली तक की यात्रा अब एक कवि सम्मेलन में भाग लेने की यात्रा नहीं रह गई थी। इसमें मेरी साहित्यिक साधना का एक नया अध्याय भी जुड़ गया था।

इस पूरे आयोजन के दौरान बिजेंद्र यादव, कीर्ति चुघ और मैंने जेएनयू के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के साथ दर्शक दीर्घा में बैठकर काव्य संध्या का आनंद लिया। किसी कार्यक्रम में मंच पर उपस्थित होना एक अनुभव है, लेकिन दर्शक दीर्घा में बैठकर दूसरों की प्रस्तुतियों का आनंद लेना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मंच पर बैठा व्यक्ति अपनी रचना प्रस्तुत करता है, जबकि श्रोता अपनी संवेदनाओं और अनुभवों के आधार पर उस रचना को ग्रहण करता है। कविता का अर्थ कवि के शब्दों तक सीमित नहीं रहता; वह सुनने वाले के मन में भी अपना संसार रचती है।

मैंने वहाँ उपस्थित विद्यार्थियों को कवियों की प्रस्तुतियों पर उत्साह से प्रतिक्रिया देते देखा। उनकी हँसी, तालियाँ और ध्यानपूर्वक सुनने का भाव यह अनुभव करा रहे थे कि साहित्य के लिए आज भी समाज में जगह मौजूद है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के बीच बैठकर कविता सुनना अपने आप में एक अलग अनुभूति है। ये विद्यार्थी देश के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। उनकी सामाजिक पृष्ठभूमियाँ अलग हो सकती हैं, उनकी भाषाएँ और विचार अलग हो सकते हैं, लेकिन शिक्षा उन्हें एक साझा मंच प्रदान करती है।

विश्वविद्यालय का वातावरण तभी समृद्ध होता है, जब वहाँ अलग-अलग विचारों और अनुभवों के लिए स्थान हो। साहित्य इस विविधता को समझने का अवसर देता है। कविता किसी ऐसे व्यक्ति की पीड़ा सामने ला सकती है, जिससे हमारा कभी परिचय नहीं हुआ। गीत किसी ऐसी स्मृति को जगा सकता है, जिसे हमने वर्षों से अपने भीतर सँभाल रखा हो। व्यंग्य हमें अपने ही समाज की विडंबनाओं पर हँसने के साथ-साथ उन पर विचार करने के लिए प्रेरित कर सकता है। उस शाम मुझे लगा कि काव्य संध्या जैसे आयोजन विश्वविद्यालय के शैक्षणिक जीवन को अधिक मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं।

जेएनयू के शिक्षकों ने मेरा और अन्य कवियों का स्वागत किया। उन्होंने आज़ाद कलम संस्था की भी प्रशंसा की। यह मेरे लिए विशेष प्रसन्नता की बात थी। 'आज़ाद कलम' मेरे लिए एक साहित्यिक संस्था नहीं, बल्कि साहित्य के माध्यम से लोगों को जोड़ने और रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने की भावना का प्रतीक है। किसी साहित्यिक संस्था की सार्थकता इस बात में है कि वह नए और पुराने रचनाकारों को संवाद का अवसर दे, साहित्यिक गतिविधियों को आगे बढ़ाए और समाज में पढ़ने-लिखने की संस्कृति को मजबूत करे। जब किसी अन्य शैक्षणिक या साहित्यिक मंच पर ऐसी संस्था के कार्यों की सराहना होती है, तो उससे आगे काम करने की प्रेरणा मिलती है।

कार्यक्रम के अंत में सभी ने सामूहिक भोज का आनंद लिया। भोजन की व्यवस्था में शाकाहारी और मांसाहारी, दोनों प्रकार के व्यंजन उपलब्ध थे! सामूहिक भोज लोगों को एक साथ बैठने, बातचीत करने और आपसी परिचय बढ़ाने का अवसर भी देता है। मंच पर कविता सुनने और सुनाने के बाद जब लोग साथ बैठकर भोजन करते हैं, तो कार्यक्रम की औपचारिकता कुछ कम हो जाती है और आत्मीयता बढ़ जाती है। इस सामूहिक भोज के दौरान दिनभर की गतिविधियों की स्मृतियाँ मन में ताजा थीं। सुबह दौसा से शुरू हुआ सफर, एम्स में बिजेंद्र सिंह यादव से मुलाकात, मेंटल हेल्थ कार्यक्रम में भागीदारी, जेएनयू पहुँचने का उत्साह, काव्य संध्या में गूँजते ठहाके और पुस्तक विमोचन का सुख—इन सबने मिलकर दिन को विशेष बना दिया था। ऐसे अवसरों पर यह भी महसूस होता है कि साहित्य मनुष्य को विचारों के स्तर पर नहीं जोड़ता, बल्कि सामाजिक और मानवीय रिश्तों को भी मजबूत करता है। कवि, लेखक, शिक्षक, विद्यार्थी और कला से जुड़े लोग अलग-अलग क्षेत्रों में सक्रिय होते हुए भी एक साझा सांस्कृतिक अनुभव के सहभागी बन गये थे इस आयोजन में।

कार्यक्रम के बाद जब लोग अपने-अपने गंतव्य की ओर जाने लगे, तब जेएनयू परिसर में विद्यार्थियों की गतिविधियाँ दिखाई दे रही थीं। रात के समय परिसर में विद्यार्थियों के अलग-अलग समूह एकत्रित थे। मैंने देखा कि आईसा, एनएसयूआई और एबीवीपी से जुड़े विद्यार्थी अपने-अपने मुद्दों को लेकर नारेबाजी कर रहे थे।

विश्वविद्यालय में विद्यार्थी राजनीति का होना अपने आप में एक महत्वपूर्ण सामाजिक वास्तविकता है। विश्वविद्यालय वह स्थान है, जहाँ युवा विषयों के अध्ययन के साथ ही , समाज, शासन, अधिकार, कर्तव्य और अपने भविष्य से जुड़े प्रश्नों पर भी विचार करते हैं। विद्यार्थी जीवन में विचारों का निर्माण होता है। युवा अपने आसपास की घटनाओं को देखते हैं, उनसे प्रश्न करते हैं और अपनी मान्यताओं को विकसित करते हैं। कई बार वे किसी विषय पर सहमत होते हैं और कई बार एक-दूसरे से असहमत भी होते हैं। लोकतांत्रिक समाज में असहमति का होना स्वाभाविक है। आवश्यक यह है कि मतभेदों को संवाद, तर्क और शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति के माध्यम से सामने रखा जाए।

उस रात परिसर में अलग-अलग छात्र संगठनों के विद्यार्थियों को अपनी-अपनी मांगों के साथ नारे लगाते देखना मेरे लिए एक विचारणीय अनुभव था। किसी भी विश्वविद्यालय की जीवंतता उसकी कक्षाओं और पुस्तकालयों के अलावा उसके विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं, सांस्कृतिक गतिविधियों, वैचारिक बहसों और सार्वजनिक जीवन से जुड़े प्रश्नों में भी दिखाई देती है। हालाँकि किसी संगठन के नारे सुनकर उसकी हर मांग या विचार के बारे में निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। प्रत्येक मुद्दे को समझने के लिए उसके संदर्भ, तथ्यों और संबंधित पक्षों को जानना आवश्यक है। फिर भी विश्वविद्यालय युवाओं के लिए अपनी बात रखने और सार्वजनिक प्रश्नों से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण मंच है।

एक लेखक के रूप में मैं मानता हूँ कि शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को सफल पेशेवर , विवेकशील, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बनाना भी है। उन्हें प्रश्न पूछने, तथ्यों को समझने और अपने विचारों को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर मिलना चाहिए। लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति इसी में है कि विचारों की विविधता के बीच संवाद के रास्ते खुले रहें। उस रात जेएनयू परिसर में विद्यार्थी समूहों की सक्रिय देखकर मन में यही विचार आया कि भारत का भविष्य इन्हीं युवाओं के हाथों में आकार लेगा। उनकी ऊर्जा को ज्ञान, विवेक, संवेदनशीलता और रचनात्मक कार्यों से जोड़ना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। रात गहराने लगी थी। दिनभर की व्यस्तता और कार्यक्रम की स्मृतियों के बाद अब सभी को अपने-अपने घरों की ओर प्रस्थान करना था। पीके मस्त अपने बचपन के साथी बिजेंद्र यादव, के साथ उनके घर चले गए। अन्य कवि और अतिथि भी अपने-अपने गंतव्य की ओर रवाना हो गए। मैं, राजपाल महावर और कवि नवल घुणावत दौसा के लिए निकल पड़े।

दिनभर की गतिविधियों के बाद मन में संतोष था। एक अच्छी काव्य संध्या का आनंद लिया था, अनेक लोगों से मुलाकात हुई थी और पुस्तक विमोचन की सुखद स्मृति भी साथ थी। अब रास्ता वापसी का था। आते समय की तरह लौटते समय भी स्विफ्ट कार राजपाल महावर ही चला रहे थे। दिल्ली से निकलकर जब हम एक्सप्रेसवे की ओर बढ़े, तो मन में दिनभर की घटनाएँ एक-एक करके उभरने लगीं।

एक ही दिन में कितने अनुभव समा गए थे! सुबह दौसा से प्रस्थान, रास्ते में पीके मस्त के ठहाके, एम्स में मित्र से मुलाकात, मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, जेएनयू का विशाल सभागार, कवियों की प्रस्तुतियाँ, पुस्तक विमोचन और देर रात विद्यार्थियों की राजनीतिक गतिविधियाँ। कभी-कभी एक दिन भी जीवन की स्मृतियों में कई दिनों के बराबर जगह बना लेता है। उस दिन का अनुभव कुछ ऐसा ही था।

वापसी के दौरान फिरोजपुर झिरका के रेस्ट एरिया में हमने गाड़ी में पेट्रोल भरवाया। लंबी दूरी की यात्रा में ईंधन की व्यवस्था के साथ-साथ चालक की थकान और यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखना भी जरूरी होता है। इसके बाद हम आगे बढ़े और पिनान रेस्ट एरिया में चाय पीने के लिए रुके।

दिनभर की भागदौड़ के बाद रात में चाय की चुस्कियाँ कुछ अलग ही सुकून देती हैं। चाय एक पेय नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक जीवन का हिस्सा है। मित्रों के साथ चाय पीते हुए यात्रा की बातें करना, दिन के अनुभवों को याद करना और आगे के रास्ते की चर्चा करना अपने आप में एक आत्मीय अनुभव है। पिनान में चाय पीने के बाद हमने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी।

रात के समय सड़क का दृश्य दिन की तुलना में अलग होता है। आसपास की हलचल कम हो जाती है, गाड़ियों की रोशनी दूर तक दिखाई देती है और यात्रा का ध्यान अधिकतर सड़क तथा मंजिल पर केंद्रित हो जाता है। दिनभर की घटनाएँ मन में चलती रहती हैं और कभी-कभी कोई एक दृश्य बार-बार याद आने लगता है। मेरे मन में जेएनयू का सभागार बार-बार उभर रहा था। विद्यार्थियों की तालियाँ, कवियों की प्रस्तुतियाँ और पुस्तक विमोचन का क्षण—ये सब यादें मन को प्रसन्न कर रही थीं।

फिरोजपुर झिरका और पिनान के बाद अब आगे के सफर में बस सड़क, कार, साथी और एक बार और चाय की तलब थी। आगे बढ़ते हुए हम भांडारेज इंटरचेंज से उतरे और आगरा-जयपुर हाईवे पर आ गए। दौसा के निकट पहुँचने के बाद भी यात्रा का एक छोटा-सा पड़ाव बाकी था क्योंकि मन में हमेशा की तरह राधिका रेस्टोरेंट की कुल्हड़ वाली चाय पीने की तलब थी । पंडित नवल किशोर शर्मा मेडिकल कॉलेज के सामने स्थित राधिका रेस्टोरेंट पर हमने एक बार फिर चाय पी। इस बार चाय कुल्हड़ में थी।

कुल्हड़ की चाय का अपना अलग आनंद होता है। मिट्टी के पात्र में चाय पीने का अनुभव हमारी ग्रामीण संस्कृति और छोटे कस्बों की आत्मीयता से जुड़ा हुआ है। महानगरों की भागदौड़ से लौटते हुए जब ऐसी जगह पर रुकने का अवसर मिलता है, तो लगता है कि यात्रा धीरे-धीरे अपनी परिचित दुनिया में लौट रही है।

दिल्ली में हमने देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय का शैक्षणिक वातावरण देखा था। वहाँ विद्यार्थियों की आकांक्षाएँ थीं, कवियों की आवाजें थीं, विचारों की विविधता थी और एक बड़े आयोजन की औपचारिकता थी। अब दौसा के निकट हाईवे पर कुल्हड़ की चाय पीते हुए मन में अपनी मिट्टी, अपने शहर और अपने परिचित परिवेश का भाव भी लौट रहा था। शहर बदलते हैं, वातावरण बदलते हैं, लोगों की भाषा और जीवनशैली बदलती है, लेकिन मनुष्य को सुकून देने वाली कुछ चीजें लगभग हर जगह समान होती हैं—मित्रों का साथ, आत्मीय बातचीत, गर्म चाय और घर पहुँचने की संतुष्टि।

राधिका रेस्टोरेंट पर चाय पीने के बाद हमने अपनी यात्रा का अंतिम चरण शुरू किया। रात काफी हो चुकी थी। हम चाहते थे कि दौसा पहुँचकर नवल घुणावत को रेलवे स्टेशन छोड़ दें और फिर अपने घर लौट जाएँ। आखिरकार रात लगभग 1:30 बजे हम दौसा पहुँचे और कवि नवल घुणावत को रेलवे स्टेशन छोड़ दिया। सुबह लगभग 11 बजे दौसा से शुरू हुई यात्रा अब अपने समापन के निकट थी। नवल घुणावत को विदा करने के बाद मैं और राजपाल महावर मेरे घर की ओर चल पड़े। जब हम घर पहुँचे, तब रात के लगभग दो बज चुके थे। इस तरह 8 अक्टूबर की सुबह शुरू हुई हमारी यात्रा 9 अक्टूबर की शुरुआती रात में समाप्त हुई।

शरीर थका हुआ था, लेकिन मन में संतोष था। लंबा सफर पूरा हुआ था और उसके साथ अनेक ऐसी स्मृतियाँ थीं, जिन्हें आसानी से भुलाया नहीं जा सकता। घर पहुँचकर मुझे यह महसूस हुआ कि किसी यात्रा का महत्व उसकी दूरी या उसमें बिताए गए समय से तय नहीं होता। महत्व इस बात का होता है कि वह यात्रा हमें क्या देकर लौटती है।

इस जेएनयू की यात्रा ने मुझे साहित्यिक आनंद दिया, नए लोगों से मिलने का अवसर दिया, मित्रता की आत्मीयता का अनुभव कराया और अपने लेखकीय जीवन की एक उपलब्धि को यादगार परिवेश में दर्ज करने का अवसर दिया। यह यात्रा समाप्त हो चुकी थी, लेकिन इसकी स्मृतियाँ मेरे भीतर हमेशा जीवित रहेगी।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की इस यात्रा के बाद मेरे मन में सबसे गहरी छाप वहाँ के शैक्षणिक वातावरण और विद्यार्थियों की ऊर्जा की रही। जेएनयू जैसे विश्वविद्यालयों में देश के विभिन्न हिस्सों से विद्यार्थी आते हैं। वे अपनी मेहनत, अध्ययन और प्रतिभा के आधार पर उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं। ऐसे संस्थानों में दाखिला पाना अनेक विद्यार्थियों के लिए वर्षों की मेहनत और सपनों की पूर्ति का परिणाम होता है। यह कहना उचित होगा कि किसी प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में प्रवेश मिलना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लेकिन प्रवेश शुरुआत है वास्तविक उपलब्धि उस अवसर का उपयोग करके ज्ञान अर्जित करना, शोध करना, अपने विचारों को विकसित करना और समाज के लिए उपयोगी योगदान देना है। मेरी दृष्टि में किसी विश्वविद्यालय की श्रेष्ठता उसकी प्रसिद्धि से नहीं, बल्कि इस बात से भी तय होती है कि वह विद्यार्थियों में कैसी दृष्टि विकसित करता है। क्या विद्यार्थी वहाँ प्रश्न पूछना सीखते हैं? क्या वे प्रमाण और तर्क के आधार पर विचार करना सीखते हैं? क्या वे दूसरों के विचारों को सुनने और उनसे असहमत होने का लोकतांत्रिक तरीका सीखते हैं? क्या शिक्षा उन्हें समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाती है? ये प्रश्न किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उस रात जेएनयू में मैंने साहित्य, शिक्षा और विद्यार्थी जीवन के कई रूप देखे। एक ओर सभागार में कविताएँ थीं, दूसरी ओर पुस्तक विमोचन था और परिसर में विभिन्न छात्र संगठनों की गतिविधियाँ भी दिखाई दे रही थीं। इन अलग-अलग दृश्यों को एक साथ देखने पर समझ में आता है कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का जीवन पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं है यहाँ ज्ञान के साथ संस्कृति, अध्ययन, अभिव्यक्ति और व्यक्तिगत भविष्य के साथ सामाजिक प्रश्न भी जुड़े रहते हैं।

एक लेखक के रूप में मैं मानता हूँ कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य को अधिक स्वतंत्र, विवेकशील और जिम्मेदार बनाना होना चाहिए। ज्ञान का अर्थ जानकारी एकत्र करने के साथ सही प्रश्न पूछना और तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष तक पहुँचना भी है। इसीलिए जेएनयू की यात्रा मेरे लिए एक साहित्यिक आयोजन में भागीदारी के साथ ही उस व्यापक शैक्षणिक संसार को देखने का अवसर भी थी, जहाँ युवा अपने भविष्य के साथ-साथ देश और समाज के बारे में भी सोचते हैं।

अब जब मैं इस पूरी यात्रा को याद करता हूँ, तो लगता है कि इसकी खूबसूरती अनेक छोटे-बड़े अनुभवों के मेल में थी। दौसा से दिल्ली तक का सफर और रास्ते में पीके मस्त की कॉमेडी; एम्स में बिजेंद्र सिंह यादव से आत्मीय मुलाकात; मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम में भागीदारी; जेएनयू के कन्वेंशन सेंटर में प्रवेश; प्रोफेसर डॉ. सुनील बैफलावत के संचालन में आयोजित काव्य संध्या; नवल घुणावत, सोनिका पवार सवेरा, रवि सिरोहा, अरुण शर्मा और आफताब आलम की प्रस्तुतियाँ; पीके मस्त का हास्य; मेरी पुस्तक का विमोचन; आज़ाद कलम की सराहना; सामूहिक भोज; विद्यार्थियों की गतिविधियाँ; और अंत में रात के सफर में चाय के छोटे-छोटे पड़ाव हमेशा याद रहेंगे! 8 अक्टूबर 2026 को सुबह 11 बजे दौसा से शुरू हुई यह यात्रा 9 अक्टूबर की रात लगभग दो बजे मेरे घर लौटने के साथ समाप्त हुई। समय की दृष्टि से यह एक दिन से भी कम की यात्रा थी, लेकिन अनुभवों की दृष्टि से इसका विस्तार बहुत बड़ा था। दिल्ली जाकर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कन्वेंशन सेंटर में काव्य संध्या में शामिल होना, देश के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच समय बिताना तथा अपनी पुस्तक 'राजनीति, प्रेस और पत्रकार के विमोचन का साक्षी बनना मेरे लिए सुखद और गौरवपूर्ण अनुभव रहा।

मैं इस आयोजन के लिए प्रोफेसर डॉ. करण सिंह और प्रोफेसर डॉ. सुनील बैफलावत के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। जेएनयू के शिक्षकों, कवियों, विद्यार्थियों और आयोजन से जुड़े सभी लोगों का आत्मीय स्वागत भी मेरी स्मृतियों में हमेशा बना रहेगा। मैं अपने साथियों राजपाल महावर, पीके मस्त, नवल घुणावत और उन सभी लोगों का भी आभारी हूँ, जिनकी वजह से यह यात्रा इतनी सहज, आनंदमय और यादगार बनी।

मेरे लिए साहित्य का अर्थ लिखना और प्रकाशित होना नहीं है। साहित्य का अर्थ लोगों से जुड़ना, उनके अनुभवों को समझना, नए विचारों से परिचित होना और समाज के साथ एक जीवंत संवाद बनाए रखना भी है। जेएनयू की इस यात्रा ने एक बार फिर मुझे इसी बात का एहसास कराया।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की यह यात्रा मेरी स्मृतियों में इसलिए हमेशा जीवित रहेगी!!

जब भी मैं इस यात्रा को याद करूँगा, दिल्ली की सड़कें, स्विफ्ट कार में गूँजते ठहाके, एम्स में हुई मुलाकात, जेएनयू का खचाखच भरा सभागार, कवियों की प्रस्तुतियाँ, विद्यार्थियों की तालियाँ और रात के समय कुल्हड़ की चाय—सब एक साथ मेरी आँखों के सामने आजायेंगी!!

डॉ. राजेंद्र यादव 'आज़ाद' मोबाइल 94 1427 1288